

वसुदेवसुतं(न्) देवं(ङ्), कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं(ङ्), कृष्णं(म्) वन्दे जगद्गुरुम् ॥



॥ गीता पढ़ें, पढ़ाएँ, जीवन में लाएँ ॥

गीता परिवार द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता का शुद्ध उच्चारण सीखने हेतु
अनुस्वार, विसर्ग व आघात प्रयोग सहित प्रायः प्रशिक्षार्थियों द्वारा होने वाली भूलों के संकेत के साथ
चरणानुसार विभाग, मूल संहितापाठ के अनुकूल

षोडश (16वाँ) अध्याय

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

‘श्री’ को ‘श्+री’ पढ़ें (‘स्त्री’ नहीं)

श्रीमद्भगवद्गीता

‘श्रीमद्भगवद्गीता’ में दोनों स्थान पर ‘द्’ आधा पढ़ें एवं ‘ग’ पूरा पढ़ें

अथ षोडशोऽध्यायः

‘षोडशो(द्)ध्यायः’ में ‘शो’ का उच्चारण दीर्घ करें [‘ऽ’ (अवग्रह) का उच्चारण ‘अ’ नहीं करें]

श्रीभगवानुवाच

अभयं(म्) सत्त्वसंशुद्धिः(र), ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।

दानं(न्) दमश्च यज्ञश्च, स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥

‘स्वा(द्)ध्या + य(र)स्तप’ पढ़ें

अहिंसा सत्यमक्रोधः(स्), त्यागः(श्) शान्तिरपैशुनम् ।

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं(म्), मार्दवं(म्) हीरचापलम् ॥२॥

‘शा(न्)तिरपैशुनम्’ में ‘र’ पूरा पढ़ें [आधा ‘र’ नहीं]

‘भूते(ष्)वलोलुप् + त्वम्’ पढ़ें, ‘हीर = ह्र + री + र’ पढ़ें

तेजः क्षमा धृतिः(श्) शौचम्, अद्रोहो नातिमानिता ।

भवन्ति सम्पदं(न्) दैवीम्, अभिजातस्य भारत ॥३॥

‘भव(न्)न्ति’ में ‘ति’ ह्रस्व पढ़ें [दीर्घ ‘ती’ नहीं]

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च, क्रोधः(फ) पारुष्यमेव च ।

अज्ञानं(ञ्) चाभिजातस्य, पार्थ सम्पदमासुरीम् ॥४॥

‘स(म्)पद’ में ‘द’ पूरा पढ़ें [आधा ‘द्’ नहीं], ‘मासुरीम्’ में ‘री’ दीर्घ पढ़ें [ह्रस्व ‘रि’ नहीं]

दैवी सम्पद्विमोक्षाय, निबन्धायासुरी मता।
मा शुचः(स्) सम्पदं(न्) दैवीम्, अभिजातोऽसि पाण्डव॥5॥

'स(स्)म्प(द्)द्विमो(क्)क्षाय' पढ़ें

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्, दैव आसुर एव च।
दैवो विस्तरशः(फ्) प्रोक्त, आसुरं(म्) पार्थ मे शृणु॥6॥

'द्वौ' पढ़ें ['दौ' नहीं], 'भूतसर्गौ' में 'त' पूरा पढ़ें, 'आसुर' में 'र' पूरा पढ़ें

प्रवृत्तिं(ञ्) च निवृत्तिं(ञ्) च, जना न विदुरासुराः।
न शौचं(न्) नापि चाचारो, न सत्यं(न्) तेषु विद्यते॥7॥

'जना न' में 'न' को ह्रस्व पढ़ें [दीर्घ 'ना' नहीं]

'वि(द्)द्यते' में 'द्य=द्+य' पढ़ें ['द' या 'ध' नहीं]

असत्यमप्रतिष्ठं(न्) ते, जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसम्भूतं(ङ्), किमन्यत्कामहेतुकम्॥8॥

'जगदाहुरनी(श्)श्वरम्' में 'हु' ह्रस्व पढ़ें [दीर्घ 'हू' नहीं]

'अपर(स्)स्पर' में 'र' पूरा पढ़ें, 'किम(न्)न्य(त्)कामहेतुकम्' पढ़ें

एतां(न्) दृष्टिमवष्टभ्य, नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः, क्षयाय जगतोऽहिताः॥9॥

'दृ(ष्)ष्टिमव(ष्)ष्ट(ब्)भ्य' पढ़ें, 'न(ष्)ष्टा(त्)त्मानो' में 'मा' दीर्घ पढ़ें, [ह्रस्व नहीं]

'प्रभवन्+त्यु(ग्)ग्रकर्माणः' पढ़ें, दोनों स्थानों पर 'ऽ' [अवग्रह के पूर्व मात्रा को दीर्घ पढ़ें]

काममाश्रित्य दुष्पूरं(न्), दम्भमानमदान्विताः।
मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्, प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः॥10॥

'काम+मा(श्)श्रि(त्)त्य' में 'त्य' पढ़ें ['त' नहीं], 'द(म्भ)मानम' में 'न' एवं 'म' पूरा पढ़ें [आधा नहीं]

'मोहा(द्)द्+गृही(त्)त्वा+सद्+ग्राहान्' पढ़ें, 'ही' दीर्घ पढ़ें [ह्रस्व नहीं]

चिन्तामपरिमेयां(ञ्) च, प्रलयान्तामुपाश्रिताः।
कामोपभोगपरमा, एतावदिति निश्चिताः॥11॥

'चि(न्)न्तामपरिमेयाञ्' में पूरा 'म' पढ़ें, 'प्रलया(न्)न्ता' में पूरा 'ल' पढ़ें, 'कामोपभोगपरमा' में 'प' एवं 'र' पूरा पढ़ें

आशापाशशतैर्बद्धाः(ख्), कामक्रोधपरायणाः।
ईहन्ते कामभोगार्थम्, अन्यायेनार्थसञ्चयान्॥12॥

'शतैर्+ब(द्)द्धा(ख्)' पढ़ें

इदमद्य मया लब्धम्, इमं(म्) प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे, भविष्यति पुनर्धनम्॥13॥

'प्राप्+स्ये' पढ़ें ['प्राप्से' नहीं] 'इदम(स्)स्ती+दमपि' में 'ती' दीर्घ पढ़ें

असौ मया हतः(श) शत्रुः(र), हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं(म्) भोगी, सिद्धोऽहं(म्) बलवान्सुखी॥14॥

'हनि(ः)ष्ये' पढ़ें, 'ई(ः)श्वरो + हमहम्' पढ़ें

आढ्योऽभिजनवानस्मि, कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया।
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य, इत्यज्ञानविमोहिताः॥15॥

'आ(ऽ)ढ्योभिजन' में आधा 'ढ' पढ़ें ['ढ' या पूरा 'ढ' नहीं], 'यक्ष्+ये' पढ़ें

अनेकचित्तविभ्रान्ता, मोहजालसमावृताः।
प्रसक्ताः(ख) कामभोगेषु, पतन्ति नरकेऽशुचौ॥16॥

'अनेक' में 'क' पूरा पढ़ें, 'चि+त्त' पढ़ें, 'भोगेषु' में ह्रस्व 'षु' पढ़ें ['षू' नहीं]

आत्मसम्भाविताः(स) स्तब्धा, धनमानमदान्विताः।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते, दम्भेनाविधिपूर्वकम्॥17॥

'धनमानम' में 'म' पूरा पढ़ें, 'द(म्)म्भेनाविधि' में 'ना' दीर्घ पढ़ें, 'विधि' पढ़ें ['विद्धि' नहीं]

अहङ्कारं(म्) बलं(न्) दर्पं(ङ्), कामं(ङ्) क्रोधं(ञ्) च संश्रिताः।
मामात्मपरदेहेषु, प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः॥18॥

'श' से पूर्व अनुस्वार आने से 'संश्रिताः' में अनुस्वार का उच्चार

सानुनासिक 'व' जैसा होगा अतः 'स(वँ)श्रिताः' पढ़ें, 'प्र(द्व)द्+विष(न्)न्तो(ः)भ्य+सूयकाः' में 'तो' दीर्घ पढ़ें

तानहं(न्) द्विषतः(ख) क्रूरान्, संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभान्, आसुरीष्वेव योनिषु॥19॥

'क्षिपा(म्)म्य + ज(ः)स्र + मशुभान्' पढ़ें

आसुरीं(म्) योनिमापन्ना, मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय, ततो यान्त्यधमां(ङ्) गतिम्॥20॥

दोनों स्थान पर 'ज(ः)न्मनि' में 'नि' ह्रस्व पढ़ें [दीर्घ 'नी' नहीं]

'यान् + त्य + धमाङ् + गतिम्' पढ़ें ['यान्ते' नहीं]

त्रिविधं(न्) नरकस्येदं(न्), द्वारं(न्) नाशनमात्मनः।
कामः(ख) क्रोधस्तथा लोभः(स), तस्मादेतत्त्रयं(न्) त्यजेत्॥21॥

'त(ः)स्मादेतत् + त्रयन्' पढ़ें

एतैर्विमुक्तः(ख) कौन्तेय, तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः।
आचरत्यात्मनः(श) श्रेयः(स्), ततो याति परां(ङ्) गतिम्॥22॥

'एतैर् + विमु(क्)क्त(ख)' पढ़ें, 'तमो(द्)द्वारैस् + त्रिभिर्नर' पढ़ें, 'आचर(त्)त्या(त्)त्मनश्' पढ़ें

यः(श) शास्त्रविधिमुत्सृज्य, वर्तते कामकारतः।

न स सिद्धिमवाप्नोति, न सुखं(न) न परां(ङ्) गतिम् ॥23॥

'शास्त्रविधि + मुत् + सृज्य' पढ़ें, 'न स सि(द्)द्धिम' में 'स' ह्रस्व पढ़ें [दीर्घ 'सा' नहीं]

'वा(ः)प्नोति' में 'ति' ह्रस्व पढ़ें [दीर्घ 'ती' नहीं]

तस्माच्छास्त्रं(म्) प्रमाणं(न्) ते, कार्याकार्यव्यवस्थितौ।

ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं(ङ्), कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥24॥

'त(स्)स्मा(च्)च्छास्त्रम्' पढ़ें, 'कार्याकार्य' पढ़ें ['कार्याकार्ये' नहीं]

'कर्तु + मिहार् + हसि' पढ़ें

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासु उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां(म्) योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसम्पद्भिर्भागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः॥

॥ ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

- विसर्ग के उच्चार जहाँ (ख) अथवा (फ) लिखे गये हैं, वह प्रत्यक्ष ख् अथवा फ नहीं होते, उनका उच्चारण 'ख' या 'फ' के जैसा किया जाता है।
- संयुक्त वर्ण (दो व्यंजन वर्णों के संयोग) से पहले वाले अक्षर पर आघात (हल्का सा जोर) देकर पढ़ना चाहिये। '॥' का चिह्न आघात को दर्शाने हेतु प्रत्येक आवश्यक वर्ण के ऊपर किया गया है। श्लोक के नीचे उच्चारण संकेत हेतु गुलाबी रंग से आघात के वर्ण लिखे गये हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि इन वर्णों को दो बार पढ़ें, बल्कि इन्हें जोड़कर वहाँ जोर देकर इन वर्णों का उच्चारण करें, यह तात्पर्य है।
- यदि किसी व्यंजन का स्वर के साथ संयोग हो तो वह संयुक्त वर्ण नहीं होता इसलिये वहाँ आघात भी नहीं होगा। संयुक्त वर्ण से पूर्व स्वर पर ही आघात दिया जाता है किसी व्यंजन या अनुस्वार पर नहीं। उदाहरण - 'वासुदेवं(म्) व्रजप्रियम्' में 'व्र' संयुक्त होने पर भी पूर्व में अनुस्वार होने से आघात नहीं आयेगा।
- कुछ स्थानों पर स्वर के पश्चात् संयुक्त वर्ण होने पर भी अपवाद नियम के कारण आघात नहीं दिये गये हैं जैसे एक ही वर्ण के दो बार आने से, तीन व्यंजनों के संयुक्त होने से, रफार (उपर र्) या हकार आने पर आदि। जिन स्थानों पर आघात का चिह्न नहीं वहाँ बिना आघात के ही अभ्यास करें।



योगेशं(म्) सच्चिदानन्दं(म्), वासुदेवं(म्) व्रजप्रियम्।
धर्मसंस्थापकं(म्) वीरं(ङ्), कृष्णं(म्) वन्दे जगद्गुरुम्॥

LEARN  GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

Learngeeta.com